01

तलाश एक आन्दोलन

आपसे मुखातिव !

ये सिर्फ बूंदें हैं – एक दो पड़ जाने से ध्यान भी नहीं जायेगा, बहुत सारे मिलकर आपको भिंगो दे सकते हैं या फिर यूँ ही बह जायेंगे।

बूंदें क्षणिक हैं, कुछ सामयिक जो समय के साथ अप्रासंगिक हो जायेगें, कुछ दीर्घकालिक हैं, कुछ शाश्वत होने की तरफ हैं, कुछ अत्यन्त व्यक्तिगत अभिव्यक्ति हैं, कुछ अनुभवगम्य, कुछ अन्य महानुभावों की समझ से प्रेरित (उनसे सविनय याचना के साथ)!

बूंदें जो इकाई हैं .... सागर की।

02

SURVIVAL OF THE FITTEST

अकाट्य है।

निरपवाद है।

वैज्ञानिक है।

प्राकृतिक है।

03

डारबिन के विकास का सिध्दान्त मूलतः एक स्थापित सत्य है। विकास श्रृखला में सबसे ऊपर मानव जाति Homosapien (Species) है।

इसके बाद ? (विकास तो रुकेगा नही)

अतिमानव ? Supersapien ?

ये अतिमानव / Supersapien कौन होगें?

- जिन्हें अच्छा भोजन
- अच्छी शिक्षा
- अच्छा स्वास्थ्य (सेवा)
- अच्छा रहन सहन मिलेगा (भौतिक रूप से उन्नत)

04

प्रमाण

– आज दुनिया विकसित देश (प्रथम)
  विकाशशील देश (दूसरी)
  अविकसित देश (तीसरी दुनियां)
  में विभक्त हो चुकी है

– अन्ततः यह जैविक परिवर्तन के रूप में परिलक्षित हो जायेगा।

– एक नया Species बन जायेगा।

– Genetic परिवर्तन हो जायेगा।

– बहुत बड़ा, ऐसा बदलाव होगा जो अपरिवर्तनीय होगा, अलांध्य होगा, संभवतः 1000 साल में।

तलाश के माध्यम से मैंने इसे सामने रखा स्वभावतः बात आयी गयी हो गई।

यही बात ओलिवर करी (LSE, London) अर्थशास्त्री, वैज्ञानिक, इंग्लैंड ने 2007 में कहा – दुनिया के सभी प्रमुख अखबारों में – प्रथम पृष्ठ का प्रथम समाचार !

क्या फर्क पड़ेगा इससे ?

"वही जो अभी मानवजाति और मानवेतर प्राणियों में है।"

मानवेतर प्राणी किसी न किसी रूप में मानव के खुराक हैं, गुलाम हैं या दयावश संपोषित हैं, संरक्षित हैं।

यदि हमलोगों ने अपनी तकनीकी क्षमता एवं कुशल व्यवस्था (प्रशासन) द्वारा, आर्थिक क्षमता नहीं बढ़ाई, पौष्टिक भोजन (Nutrition), बेहतर शिक्षा, उच्च भौतिक जीवन स्तर और सार्वभौम सुरक्षा की अनवरत व्यवस्था नहीं की तो अगले कुछ ही सौ साल में हम दूसरे स्तर के प्राणी (Species) रह जाएँगे। हम उच्च स्तरीय (Another Species) लोगों द्वारा शोषित एवं संपोषित प्राणी हो जायेंगे। यह वैज्ञानिक गल्प नहीं वरन् वैज्ञानिक हकीकत है। अतः सभी विचारवान् देशवासियों को एकजुट होकर इस स्थिति से उबरना होगा।

चौपायों से दोपाया की यात्रा के बीच कुछ आज भी गुरिल्ले, चिपांजी या बंदर की अवस्था में कैसे रह गए ? वे आजतक लगभग वैसे ही Progeny क्यों उत्पन्न करते रह गए, जबकि मानव इतने भिन्न हो गए ?

क्योंकि विकास की आवश्यकता को वह महसूस नहीं कर पाए और उनका संतुष्ट अंतर्मन रुक गया वहीं ! (They stopped to feel that they should improve).

चाहत से आनुवांशिक परिवर्त्तन संभव है। इसका क्या मेकेनिज्म है ? हर कोई तो बेहतर होना चाहता ही है। मेरे पास प्रमाण नहीं है। उदाहरण है। उदहारण के रूप में प्रमाण है।

किसी घटना को सुनकर हमें रोमांच हो जाता है। सुनना मानसिक प्रक्रिया है। रोंगटों का खड़ा हो जाना शारीरिक परिवर्त्तन। विपरीत सेक्स की कल्पना कई शारीरिक क्रियाएँ उत्पत्र करने में सक्षम है। चरम अनुभूति शरीर के कण–कण की अनुभूति कैसे हो जाती है। अत्यंत बुरी खबर से हृदय की धड़कन क्यों रुक सकती है ? आँसू क्यों निकल जाते हैं ?

'विचार' काफी असरदार ढंग से हमारी शारीरिक प्रक्रियाओं को प्रभावित कर सकता है। बराबर करता रहता है।

विकास के लिये जीवन की जिजीविषा, उसकी आवश्यकता एवं उपलब्ध वातावरण (संसाधन) ही मुख्य कारक हैं।

विकास 'आवश्यकता' एवं 'उपलब्धता' पर आधारित है। इसीलिए दुनिया में इतनी भिन्नता है।

लगातार 'चीजों' की उपलब्धता, बेहतर होने की इच्छा की सचेतन प्रक्रिया के द्वारा ये परिवर्तन आनुवांशिक हो जाते हैं। ऐसे कई आनुवांशिक परिवर्त्तन यदि महत्त्वपूर्ण हो गये तो प्रजाति बदल जाती है।

ऐसे कुछ लोग तकनीकी, बेहतर मारक क्षमता, आर्थिक क्षमता के कारण, एक पूरे देश, महादेश का भयानक आर्थिक शोषण / गुलाम बनाने में सक्षम हो गये। पहले लोगों का Genocide (Red Indian, Native) तक किया जा चुका है। क्या हमारा वही हश्र होना चाहिए?

क्या आप चाहेंगे कि आपके बच्चे Homosapian रह जाएँ और कुछ दूसरे अति मानव हो जाएँ ? और जैसे सभी जीव आज की मानव जाति के लिए किसी न किसी रूप में खुराक हैं, आपका Progeny भी Supersapian के लिए इसी रूप में शामिल हो जाए ? नहीं! कदापि नहीं।

यही विचार 'तलाश' के उद्‌गम का मुख्य कारण है। एक मेडिकल जर्नल के संपादक के रूप में भी सन् 2002 में ये बातें मैंने लिखी थी। 'तलाश' अभियान से इसका सीधा संबंध है।

इसलिए 'तलाश' चाहता है कि हमारे लोगों को बेहतर एवं पूरा भोजन, बेहतर कपड़े, बेहतर सड़कें, स्वस्थ वातावरण, उच्चतम शिक्षा मिले।

हम चाहते हैं लोगों में युगों से संतुष्ट रह जाने की मानसिकता को छोड़कर प्रगति की आंतरिक दुर्घर्ष भावना उत्पन्न हो; ताकि उपलब्धता एवं बेहतरी की चेतन एवं अवचेतन आकांक्षा द्वारा उन सकारात्मक आनुवांशिक गुणों में परिवर्त्तन हो जाए जो हमारे बच्चों को Supersapian के रूप में विकसित कर देंगे।

कैसे होगा ?

मिलें तो सही – बातें तो हों...

1. गलत को गलत कहें।
2. अच्छे को अच्छा कहें।
3. अपनी आमदनी वाजिब तरीके से प्रतिदिन बढ़ाएँ।
4. रचनात्मक सामूहिक सोच का निर्माण करें।
5. सभी कार्य अराजनैतिक एवं अहिंसात्मक हों।

यदि लोगों ने तलाश के उपरोक्त मूल कथ्य का अनुपालन शुरू किया और 'मिलें तो सही', 'बातें तो हों' इसको जीवन में उतारा तो 'तलाश' नाभिकीय विखण्डन (Nuclear Fission) जैसा वैचारिक परिवर्तन करने में सक्षम है। इससे हमारे जीवन के सभी आयामों से संबंधित सारे कार्य सही दिशा में त्वरित गति से ठीक होने लगेगें। तब हम और हमारा संतान (Progeny) अपने पुराने गौरव को पुनः प्राप्त कर लेगा : हम भी प्रथम श्रेणी के प्राणी (Species) बने रहेंगे।

गुलामी

आर्थिक शोषण ही गुलामी है।

राष्ट्रपति लिंकन से पूर्व एक मानव दूसरे मानव का गुलाम हुआ करता था। गुलामी का मोल एक गुलाम क्या चुकाता था? वह सब कुछ जो उसके पास था। अर्थात बहुत ही कम मूल्य, सिर्फ जीने की शर्त्त पर उसके हाथ/पैर/सारी शारीरिक शक्ति (उसका एकमात्र आर्थिक बजूद) बुद्धि का उपयोग उसके स्वामियों के लिए होता था।

गुलामी

उसके कुछ समय बाद इस आर्थिक शोषण का स्वरूप बदल कर उपनिवेशवाद के रूप में ज्यादा वृहत् एवं सामूहिक स्तर पर होने लगा। एक पूरा समाज एक दूसरे पूरे समाज का गुलाम हो गया। 'आर्थिक शोषण' ही तो होता था।

आर्थिक शोषण ही हर प्रकार के (सामाजिक, मानसिक, शारीरिक) शोषण का आधार है।

गुलामी

आज के समय में इस आर्थिक शोषण का स्वरूप तकनीकी श्रेष्ठता (Superiority) के रूप में परिलक्षित है, जिसका उपयोग उपभोक्ता सामग्री से लेकर देश की सुरक्षा संबंधी उत्पादों द्वारा किया जा रहा है देशों की सीमा के अन्दर या उसकी सीमा से परे भी यह तकनीकी शोषण जारी है, एवं समयानुसार यह उग्रतर होता जाएगा। अतः हमें इस प्रकार के शोषण से मुक्त होना होगा। यह प्रथम स्तर के गुलामी का ही दूसरा स्वरूप है।

यह बहुत ही भीषण, दुर्घर्ष और अनवरत है; हमेशा रहेगा।

गुलामी

तकनीकी पिछड़ापन = आर्थिक विपन्नता = गुलामी

कोई अविकसित / विकाशशील देश जब दूसरे विकसित देश से कोई चीज (यथा सुखोई–30, F–16, राफेल विमान या चिकित्सकीय उपकरण, MRI मशीन इत्यादि) खरीदता है उसकी कीमत उत्पादक देश 'Y' मानव कार्य दिवस लेता है; जो खरीदार देश के 100 से 1000 Y मानवकार्य दिवस के बराबर होता है।

अर्थात उत्पादक देश का एक नागरिक यदि एक दिन काम करता है तो उसके लिए खरीदार देश के एक व्यक्ति को 100–1000 दिन कार्य कर उसका मूल्य चुकाना पड़ता है।

सीधे तौर पर यह गुलामी ही है।

तकनीकी श्रेष्ठता ही आज की आजादी है। हमें कड़ी मेहनत से यह श्रेष्ठता प्राप्त करनी ही होगी।

गुलामी

आर्थिक विपन्नता ही वैयक्तिक / सामाजिक / राष्ट्रीय गुलामी है।

आर्थिक शोषण ही हर प्रकार के गुलामी का आधार है।

"अपनी आमदनी वाजिब तरीके से प्रतिदिन बढ़ाये"।

तलाश एक विचारधारा रूपी आंदोलन है

जो धरातल पर ऐसे कार्य कर सके जिससे हमारा जीवन स्तर उच्चतर हो सके। यह सब सिर्फ कार्य करने से ही संभव है, न कि केवल विचारों के आदान–प्रदान से। लेकिन हर कार्य के पहले विचार उत्पन्न होना, उसमें दृढ़ता होना आवश्यक है।

आज के संदर्भ में ऐसा लगता है कि हमारे समाज में कार्य करने की एजेंसियाँ (Agencies), सरकारी या गैर–सरकारी काफी हैं। परन्तु यथार्थ यही है कि **आम आदमी बहुत परेशान है।** इसका प्रमुख कारण, जो कार्य करने वाले हैं उनमें उत्तरदायित्व के अंतः बोध (Internal Policing) एवं उनसे काम करवाने का बाह्य–दबाव (External Policing) दोनों का अभाव है।

आम आदमी में सही–गलत का अंतः बोध (Internal Policing) ही वह तत्त्व हो सकता है जो सभी निकायों की जंग या जकड़न छुड़ाकर फिर से उन्हें चलायमान कर सकता है क्योंकि अन्ततः वही मालिक है, वही उपभोक्ता है। अतः हर व्यक्ति का वैचारिक परिवर्त्तन एवं उसमें आवश्यक वैचारिक दृढ़ता उत्पन्न करना आवश्यक है।

कार्य होने का दूसरा कारण बाह्य दबाव (External Policing) की व्यवस्था सभी सरकारी एवं गैर–सरकारी तंत्रों में पहले से ही है, फिर भी वह अक्षम है, निष्क्रिय है अथवा विपरीत दिशा में काम करता है। प्रजातांत्रिक व्यवस्था में आवश्यक दबाव (External Policing) की दिशा और गति दोनों आम आदमी ही उत्पन्न कर सकता है।

यह गलत को गलत कहने से होगा।

समाज, देश की दुर्दशा बुद्धिजीवी एवं अधिकार संपन्न लोगों के स्वार्थ–पोषण के कारण ही हुई है। परन्तु, यही वह वर्ग है जो अच्छा परिवर्त्तन करने में सक्षम है। गिरावट से इसी वर्ग को परेशानी भी ज्यादा है। अच्छी और सही दिशा में समाज के चलने से पुनः सबसे ज्यादा शुकून भी इसी को होगा। अतः आपका खास दायित्व है कि समाज के दिशा निर्देशन करने के लिए संकल्पबद्ध हों।

भारत जैसे अध्यात्म या धर्म प्रधान देश में जहाँ थोड़े से संतोष करना आर्ष–वाक्य के रूप में प्रचलित है, वहाँ भौतिक उत्थान की बात करना, भौतिक रूप से जीवन–स्तर बढ़ाने को कहना कहाँ तक उचित है; यह बात आसानी से लोगों की समझ में नहीं आती है।

करना क्या हैं ?

कंबल बाँटना, मुफ्त शिक्षा, मुफ्त भोजन या चिकित्सा देना, मर्ज का समुचित इलाज नहीं है। हमें **"मिल जाता है" की मानसिकता से निकल कर 'मैं अर्जित कर सकता हूँ/मुझे अर्जित करना ही पड़ेगा'** की मानसिकता तक पहुँचने की आवश्यकता है।

Artificial intelligence कहीं न कहीं, किसी न किसी Super Intelligent के नियंत्रण में रहेगा; लेकिन सामान्य लोगों का शोषण उग्रतर होता जाएगा। उनकी स्वतंत्रता बाधित होती रहेगी।

करना क्या है ?

यह सुनिश्चित करना कि जो जिन्हे 'देय' है वह उन्हें अवश्य एवं पूरी तरह से मिले। इस सत्य को पुनः समझना होगा कि यह उपभोक्ता या प्रजातंत्र का मालिक – आम व्यक्ति ही कर सकता है, क्योंकि 'दायी' संस्थाएँ गोलबंद होकर इसे नकारती हैं और इससे सम्पूर्ण समाज का पतन होता है। स्पष्टतः जो कहीं देने वाला (अधिकारी या अन्य) है वह भी दूसरी जगह (शिक्षा, चिकित्सा सड़कों का) उपभोक्ता है।

हर कोई उपभोक्ता है !

आज एक रुपया और !

हमारे देश की जनसंख्या आज करीब 130 करोड़ है। यदि हर व्यक्ति प्रतिदिन सिर्फ एक रुपया (वाजिब तरीके से) भी और कमाये तो प्रतिदिन इस देश में 130 करोड़ रुपये का ज्यादा कार्य होने लगेगा।यदि एक रुपया प्रतिदिन दस हाथों से गुजर जाए तो वह एक रुपया दस रुपया (1300 करोड़ प्रतिदिन) का काम कर डालेगा। एक वर्ष में–देश में कितना उपार्जन हुआ ?

आपकी ताकत = आपकी आर्थिक क्षमता

आपके देश की ताकत = देश की आर्थिक क्षमता।

आज एक रुपया और...

आमदनी बढ़ाने का प्रोत्साहन (Incentive) नहीं रहने से अधिकतर युवक ताश खेलने लगते हैं, जो जुआ खेलने में परिवर्तित हो जाता है फिर शराब पीने में रूपान्तरित हो जाता है, जो चोरियाँ करने अथवा अन्य प्रकार के छोटे–बड़े अपराध–कर्मों में परिवर्तित हो जाता है। इससे निर्मित भी बिगड़ जाते हैं और यह हमारे मानव संसाधन का भयानक दुरुपयोग है।

एक रुपया और लोगों की सृजनात्मक शक्ति को भी बढ़ाएगा।

अराजनैतिक क्यों?

राजनीति जीवन का आवश्यक पहलू है।

राजनीति हमारे जीवन को हर दिन, लगभग हर जगह प्रभावित करती है।

हर व्यक्ति राजनीति को प्रभावित करता है फिर अराजनैतिक होना कैसे संभव है ?

महात्मा गाँधी का राजनैतिक कार्य सामाजिक उत्थान के लिए राजनीति के (शासन तंत्र के) उपयोग का मार्ग था परन्तु स्वयं राजनीति से कोसों दूर थे : अराजनैतिक थे।

'तलाश' आन्दोलन का उपयोग अपने को राजनीतिक फायदे पहुचाने के लिए नहीं हो!

अहिंसात्मक क्यों?

हिंसा में संघर्ष सन्निहित है।

संघर्ष में उभय शक्तियों का क्षय भी निश्चित है।

हिंसा प्रतिक्रियात्मक है।

अन्य कार्यों में भी बाधा डालती है।

आगे कभी भी ऐसे झगड़े/पचड़े में न पड़ने की सीख मिल जाती है।

छूटे हुए बाण की तरह है।

न लौट सकता है न इसका पुनः उपयोग हो सकता है।

विजय किसी एक ही पक्ष का सम्भव है।

अहिंसा में अपनी ऊर्जा का भंडार विशाल होना आवश्यक है, उसमें क्षय नहीं होता, संघर्ष नहीं होता।

सामूहिक सोच का बल

एक पूर्व महानिबंधक बिहार के अनुसार सिर्फ बिहार में 20 हजार से ज्यादा स्वयंसेवी संस्थाएँ हैं, जिनमें करीब 2 हजार कार्यरत हैं, एवं उनमें काफी संस्थाएँ अच्छा कार्य कर रही हैं। इस प्रकार सम्पूर्ण भारत में कितनी संस्थाएँ हुईं ? ऐसी संस्थाएँ एवं लोग इतनी ज्यादा संख्या में वर्षों से कार्य कर रहे हैं।

फिर भी अपेक्षित असर नहीं है। क्योंकि लोगों के स्वर अलग–अलग हैं।

सामूहिक स्वर ही असरदार हो सकता है।

सामूहिक सोच का बल

'तलाश' की मूल अवधारणाओं में यह मूल बात है कि लोग/संस्थाएँ/संघ मूलभूत तथ्य पर एक स्वर से आवाज दें, तब यह आवाज इतनी बुलंद होगी कि बहरे बने लोग भी सुन लेंगे।

- **सामूहिक सोच की ताकत सर्वोपरि है।**
- परिवर्त्तन के लिए समर्थ है।
- परिवर्त्तन के लिए आवश्यक है। इसके बिना यथा–स्थिति बनी रहेगी

...परन्तु करना क्या है ?

- एक और व्यक्ति से मिलना है–
- फिर कुछ और से–
- एक इकाई बनानी है–

पहचान करनी है :–

- रूकावटों की :–
- समस्याओं की–
- जरूरतों की–
- जीवन स्तर के उत्थान में प्रगति के उपायों की।
- सबसे आसान को कर डालना है,
- निदान ढूंढ़ना है – कार्यान्वित करना है : अगली जरुरत/ समस्या का।

मिलें तो सही, बातें तो हों..............

गलत को गलत कहें – अच्छे को अच्छा

- समाज कैसे चलता है? इसके अपने रीति–रिवाज हैं। शादियों के नियम, सामाजिक व्यवहार के नियम (विधि), लिखे हुए हो सकते हैं परन्तु वे कानून नहीं हैं। सब कुछ कानून के दायरे में नहीं है। हर बात के लिए कानून बनाना संभव नहीं है फिर भी समाज चल रहा है और सुचारू रूप से चल रहा है; रीति रिवाजों –परम्पराओं के कारण।
- इन परम्पराओं (रीति–रिवाजों) के प्रति व्यक्तिगत प्रतिबद्धता (Internal Policing) होती है।
- यह कैसे सुनिश्चित होती है ?
- समाज में आदर्श कैसे स्थापित हुये/ होते हैं ?
- नये आदर्श कैसे बन जाते हैं?

क्रमशः

गलत को गलत कहें –अच्छे को अच्छा

मर्यादा पुरुषोत्तम राम का व्यवहार अनुकरणीय था, आदर्श था, कानून कभी नहीं बना।

आज भी उदाहरणीय है – कानून नहीं क्यों ?

ऐसा ही हर समुदाय में है ?

इसमें अनुपालनार्थ कोई न्यायिक प्रक्रिया दण्ड विधान भी नहीं है,

फिर भी इसका परिपालन कैसे सुनिश्चित है?

सामान्य लोकाचार के प्रति लोग कानूनी व्यवस्था से कहीं ज्यादा आश्वस्त होते हैं।

क्यों?

क्रमशः

गलत को गलत कहें – अच्छे को अच्छा

क्योंकि गलत को लोग गलत कहते है, उसकी भर्त्सना करते है।

"लोग भला क्या कहेंगे" ?

लोगों के कहने में अपार शक्ति है।

'लोगों का कहना' अत्यंत मजबूत बंधन है, नियंत्रण है। हर कदम पर कामयाब है और हर जगह इसकी आवश्यकता है।

यह लोक–लाज, स्वीकृत मापदंड (accepted norms) कानून से कहीं ज्यादा ताकतवर है, जिसका लोग अनुसरण करते हैं।

अतः असरदार है।

अच्छे को अच्छा कहें !

गलत को गलत कहना साहस का कार्य है।

- विभिन्न प्रकार की परेशानियाँ उत्पन्न हो सकती हैं।
- गलत को गलत कहना, दवा तो है परन्तु बहुत कड़वी है। काफी हद तक सही है।
- परन्तु अच्छे को अच्छा कहने में कोई आग उत्पन्न नहीं होती है।
- फिर भी यह बहुत प्रचलित नहीं है। क्योंकि यह भी साहस का कार्य है, **एक सक्रिय प्रयास है।**
- हम अपने सभी तकलीफों के प्रति उदासीन हैं। निष्क्रिय हैं।

सक्रिय होना आवश्यक है।

अच्छे को अच्छा कहें !

बेजारी / अन्यमनस्कता / जड़ता से अलग, अच्छे को अच्छा कहना भी एक प्रक्रिया है। इसमें भी प्रयास लगता है।

- फिर भी आसान है।
- अत्यन्त वांछनीय है।
- उत्प्रेरक है।
- दिशा निर्देशक है।
- बीज मंत्र की तरह असरदार है।

जीवन में इस प्रकार के अणु प्रयास में कोई क्षति नहीं, कोई खर्च नहीं, कोई हिंसा नहीं फिर भी इसकी अत्यंत कमी है।

अच्छे को अच्छा कहना शुरू तो करें।

गलत को गलत कहें – अच्छे को अच्छा

- गलत को गलत एवं अच्छे को अच्छा कहना सड़क के दो किनारों की भांति हैं।
- नदी के दो किनारों की तरह सामाजिक प्रवाह को सुनिश्चित एवं सुव्यवस्थित करती हैं।

इन्हें हमें अपने दैनिक जीवन, सामाजिक जीवन, राष्ट्रीय जीवन में अपनाना ही चाहिए।

तलाश–एक आन्दोलन : लड़ाई

स्वतंत्रता की लड़ाई –

- दुश्मन सामने था; आकार था; पहचान थी,
- सुभाष और गाँधी आए।

महाभारत की लड़ाई–

- दुश्मन सामने थे; सगे भाई–बांधव थे; गुरु/पितामह थे।
- निर्णय कठिन था।
- कृष्ण को आना पड़ा, अर्जुन को गाण्डीव उठाना पड़ा।

तलाश–एक आन्दोलन : लड़ाई

विकास की लड़ाई –

- दुश्मन की पहचान भी मुश्किल है, आकारहीन है,
- स्वार्थ, भ्रष्टाचार, निष्क्रियता, समाज से बेजारी, आलस्य।

मुश्किल है :

ये सभी दुश्मन हमारे अन्दर ही बैठे हैं,

अतः खुद से लड़ना होगा, आपको आगे होना होगा।

गिरावट में अपनी भागीदारी कम करनी होगी।

थोड़ा और कम करें। तटस्थता दूर करनी होगी।

फिर दबाव बनाने में सक्रिय होना होगा।

लड़ाई

'लड़ाई' बहुत सुक्ष्म है।

जैविक रूप से Self और Not Self की लड़ाई है।

Genetic or DNA की लड़ाई है।

इसका वाह्य परिवर्धित रूप, व्यक्ति, परिवार, गाँव, कबीला, जाति, धर्म और देश; हर स्तर पर लड़ाई है।

(फिर भी कितना आश्चर्यजनक प्राकृतिक सामंजस्य और स्थिरता है ?)

एक कोशीय जीव से वहुकोशीय जीव का विकास हुआ, इसका कारक है सामूहिक हित की पहचान जो व्यक्तिगत हित से ऊपर है।

इसका अधिकाधिक बोध ही विकास है–पहली दुनिया है।

लड़ाई

आतंकवाद / अतिवाद अन्ततः व्यक्तिवाद का विस्तारीकरण है जो सार्वभौम नहीं हो सकता है, जो ईश्वरीय नहीं हो सकता है अतः हारेगा ही परन्तु पत्युत्तर के बिना नहीं, सार्वजनिक प्रतिबद्धता के बिना नहीं।

युद्ध

युद्ध मान्यताओं/विचार धाराओं की होती है।

विचार हमें instrument की तरह उपयोग कर लेता है।

सूक्ष्म स्तर पर DNA का self or not self का युद्ध है।

परन्तु जैसे खरबों कोशिकाएं अलग व्यक्तित्व होते हुये भी एक शरीर के रूप अनुशासित और कार्यशील होते हैं वैसे ही एक राष्ट्र के लिए हर व्यक्ति को होना होगा।

Unison of Mind --- APJ Kalam

विफल तंत्र

पूरा तंत्र है; शिक्षक है; प्रधानाध्यापक हैं; उनके ऊपर निरीक्षक हैं; सबडिविजन, जिला, क्षेत्र में निदेशक एवं विभाग में सचिव स्तर के पदाधिकारियों की कड़ी बनी हुई है। ऐसा ही स्वास्थ्य विभाग के लिए या अन्य विभागों या कार्यों के लिए भी है। परन्तु वास्तविक स्थिति हम सब की नजरों के सामने है।

आजादी के पूर्व के बने भवन, पुल आज भी खड़े हैं। उसके बाद बने सरकारी भवनों एवं पुलों की स्थिति स्पष्ट है।

उपाय ?

विफल तंत्र : निजीकरण ?

निजीकरण सामाजिक / सामूहिक अकर्मण्यता, उत्तरदायित्वहीनता, बेईमानी और भ्रष्टाचार का प्रबंधन (Management) है।

तलाश का प्रश्न यह है कि वही व्यक्ति जो सरकारी तंत्र में असरहीन, उदासीन, भ्रष्ट होता है निजी संस्थानों में कैसे कार्यकुशल और ईमानदार होकर लाभ देने लगता है ?

सरकारी नौकरी में अतिशय संवैधानिक सुरक्षा एवं उत्तरदायित्व निर्धारण की कमी इसका प्रमुख कारण है।

हमारा शहर और मेढ़क

मेंढ़क में एक अंग Cloaca (क्लोएका) होता है जिसके द्वारा – मल उत्सर्जन, मूत्र उत्सर्जन, प्रजनन संबंधी सभी क्रियाएं होती हैं।

हमारे शहर एवं गाँवों में सड़कें हैं –

- जिस पर लोग मल–मूत्र त्याग करते हैं।
- सभी प्रकार के कचरे फेंकते है, हमारे घर के नालों का निकास स्थल है, बरसाती पानी का भी एकमात्र निकास है।
- इस पर हम दुकानें सजाते हैं, ठेलों पर सामान बेचते हैं, शादी–विवाह, पूजा एवं अन्यान्य सामूहिक कार्य करते हैं।
- इस पर चलने का भी कार्य करते हैं।

क्या हम और हमारा शहर अभी मेंढ़क तक की ही विकासावस्था में हैं ?

द्रौपदी बेचारी, क्रम–1

जूए के पासे से भारत की सबसे कुलश्रेष्ठ नारी, महारानी द्रौपदी, सरेआम सजे हुए भव्यतम राज प्रासाद में भीष्म, द्रोण और कृपाचार्य की उपस्थिति में बाल पकड़कर घसीट लाई गई–

रजस्वला, एकवस्त्रा एक नारी (महारानी द्रौपदी को) का सभा मंडप में चीर हरण हो, ऐसे इतिहास वाले इस भारतवर्ष में अक्सर दलित महिलाओं को यदि गाँवों या मुहल्लों में लोग नंगे घुमाते हैं और प्रशासन और न्याय व्यवस्था यदि पंगु रह जाती है तो गलत कहाँ है ?

द्रौपदी बेचारी, क्रम–2

सत्ता से जुड़े रहने और राजसुख के आनंद के कारण यदि भीष्म, द्रोण एवं कृपाचार्य की आँखें इस दृश्य को देखने के लिए खुली रह सकती हैं तो हमारी व्यवस्थापिका एवं कार्यपालिका के पदाधिकारियों की क्यों नहीं? उनका क्या दोष ?

गरीबी रेखा के नीचे जीनेवाले 40% लोगों के बीच एक से दो लाख रुपया महीना एवं बिना काम के लाख रुपए से ज्यादा पेंशन पानेवाले हमारे पदाधिकारियों का क्या दोष?

द्रौपदी बेचारी, क्रम–3

जब भीष्म, द्रोण और कृपाचार्य (हमारे संवैधानिक प्रधान लोग) कुछ नहीं बोलें तो सामान्य सभासद (वकील, इंजिनियर, डॉक्टर, शिक्षक, वैज्ञानिक आदि) क्यों बोलें? इन्हीं कायरतापूर्ण कुतर्कों के तहत आज का बुद्धिजीवी वर्ग/साधन संपन्नवर्ग/अधिकार संपन्न वर्ग यदि राष्ट्रीय हितों का हर समय खुलेआम (राज सभा में, सबों की उपस्थिति में रजस्वला, एक वस्त्रा द्रौपदी के चीर हरण की तरह) नीलाम कर रहे हों तो क्या आश्चर्य ?

द्रौपदी बेचारी, क्रम–4

दुर्योधन एकछत्र राजा (राजनैतिक पार्टियाँ / राजनीतिज्ञ) शासक बने रहने के लिए जुआ (भ्रष्टाचार) का सहारा लेने में वाजिब हकदारों (भारतीय जनता) को उस समय 14 वर्षो का वनवास (तो आज 70 वर्षो का विकासहीन, असम्मानपूर्ण जीवन) देने में आर्यावर्त्त के कर्णधारों को उस समय कोई परहेज नहीं था तो आज सत्ता सुख के लिए देश को जाति, धर्म, क्षेत्र, भाषा, आतंक, नित नई विध्वंसक खोजों का उपयोग कर सत्ता पर काबिज होने या बने रहने के लिए करने में क्या दोष?

द्रौपदी बेचारी, क्रम–5

कृष्ण ने संपूर्ण आर्यावर्त्त के उन सबों का विनाश क्यों कर दिया/होने दिया जिनमें थोड़ा भी सत्त्व (बेहतर Genetic material) था। इसके बावजूद वे योगेश्वर, अवतार, भगवान कैसे हो गए ?

द्रौपदी बेचारी, क्रम–6

जिस देश में, जिस सभा में द्रौपदी का चीर हरण हो, जिसे विभिन्न बहानों के तहत लोगों ने देखा और सहा वे सभी निश्चित रूप से विनाश के काबिल थे/हो जाता है। और विनाश करने वाला निर्माता, नायक और निर्णायक हो जाता है; विधाता हो जाता है नये युग की शुरुआत होती है।

द्रौपदी बेचारी, क्रम–7

द्रौपदी (राष्ट्रहित) की पुकार को आज कोई नहीं सुन रहा। आज क्या राजनीतिज्ञ (संसद), क्या अधिकारी (कार्यपालिका), क्या बुध्दिजीवी, पत्रकार / मिडिया / साहित्यकार अधिकार संपन्न लोग, सामान्य जन सभी चीर हरण देख नहीं; कर रहे हैं।

पहले अपनों द्वारा (जाति व्यवस्था के तहत) उसके बाद मुगलों द्वारा विजित होने के कारण; फिर अंग्रेजों द्वारा रौदे गये, पर स्थिति वही है, हम अभी भी नहीं चेते हैं, अब किसकी बारी है किसी पड़ोसी देश की ? जो हमें पुनः रौदेंगा ?

57

द्रौपदी बेचारी, क्रम–8

इतिहास दुहराया जा रहा है ? पुनः महाभारत होगा ? पता नहीं ! परन्तु चीरहरण तो जारी है। यदि समय रहते गलत को गलत नहीं कहा गया, अच्छे को मान्यता नहीं मिली, एक पुरजोर सामूहिक आवाज नहीं उठी, तो पुनः विनाश अवश्यंभावी है।

उठें ! महाभारत रोकें या फिर उसका प्रारंभ करें।

58

विचारणीय 1

भारत सरकार या भारत के लोग ?

1. राजकाज के सभी प्रकार के पत्राचारों (Communication) में 'भारत सरकार' या राज्य सरकार लिखा जाता है।

2. संविधान WE THE PEOPLE OF INDIA 'हम भारत के लोग' के नाम से अंगिकृत हुआ है। अतः **'सरकार' लिखना गैर संवैधानिक प्रतीत होता है।**

59

विचारणीय
भारत सरकार या भारत के लोग ?

3. जब जनतंत्र, जनता द्वारा, जनता का और जतना के लिए ही गठित है तब सभी (कार्यकलापों) में उसका ही बोध होना चाहिए।

4. जनतंत्र में जनता ही सर्वेपरि है तथा जनता के प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष कर से ही देश या राज्यों की व्यवस्था चलती है, सभी खर्चे उसी के हैं, सभी सम्पत्ति, परिसम्पत्ति भी जनता की है अतः सभी संवादों में उसी की अहमियत का बोध होना चाहिए।

60

विचारणीय
भारत सरकार या भारत के लोग ?

5. कर से प्राप्त धन का व्यय जनसेवकों (चाहे राजनीतिज्ञ ही क्यों न हो), कर्मियों द्वारा किया जाता है वे उसके मालिक (सरकार) नहीं हो सकते है।

6. जो धन देता है उसी का मालिकाना हक बनता है, अतः सभी घोषणाएँ, संचार भी उसी (भारत के लोग) के नाम से होना चाहिए।

7. राजस्व ग्रहण करने वाले एवं व्यय करने वाले व्यवस्थापक मात्र है, मालिकाना हक के रूप में जनता का ही बोध होना चाहिए।

8. कई देशों में ऐसी ही व्यवस्था है।

विचारणीय
भारत सरकार या भारत के लोग ?

9. सरकार शब्द ही सामंतवादी (Non Democratic, Authorization / Dictatorial) उद्घोषणा है।

10. भारत की अधिसंख्य आबादी अभी भी अपने को सत्ता का भागीदार नहीं समझती है। सरकार शब्द उन्हें और भी सत्ता से दूर करता है।

11. जिस प्रकार या जिस तरह से / जिस कारण से महामहिम MY LORD सम्बोधन हटाया गया उसी तरह से 'भारत सरकार' सम्बोधन भी हटा दिया जाना चाहिए।

12. जिस प्रकार लाल, पीली, नीली बत्ती और तख्ती हटायी गई उसी तरह इसमें भी परिवर्तन होना चाहिए।

विचारणीय
भारत सरकार या भारत के लोग ?

13. सरकार शब्द निरीह जनता में भय का संचार करती है।

14. सरकार शब्द से जनता अपने कर्तव्यों और उत्तरदायित्व की भावना से भी अपने को दूर कर लेती है और सरकार पर सारी जिम्मेदारी डाल देती है।

15. कई माह तक चली तलाश की गोष्ठियों में अनेकानेक विचारकों, बुद्धिजीवियों एवं जनसंस्थाओं (Civil Bodies) ने भाग लिया एवं उनकी आम सहमति भी यही है।

16. जनतंत्र के लिए आवश्यक है।

विचारणीय 2
कर्त्तव्य

– कितना स्पष्ट है कि चीन हर तरफ से हमें घेर रहा है फिर भी हम चीनी सामान खरीद रहे है–देश द्रोह ही है।

– लाभ के लिए गुणवत्ता नहीं देना (जो हमारे सरकारी और गैर सरकारी उत्पादक कर रहे है।) भी देश द्रोह ही है।

– सैन्य शिक्षा, तकनीकी श्रेष्ठता आर्थिक मजबूती ही हमें गुलामी से बचा सकता है।

– गुलामी बहुत कष्टकर है। स्वर्णमंदिर अमृतसर के म्यूजियम में कई हृदय विदाकर उदाहरण उपलब्ध है।

विचारणीय 3
केन्द्रित या विकेन्द्रीकरण।
स्वायत संस्थाएँ–1

संदर्भ : CBI / NIA @ RAW @RBI / अन्य

– CBI देश वासियों के लिए अन्तिम जाँच एजेंसी।
– अखबार के अनुसार Conviction rate <4% ।
– निवारण ?
– Permanent अलग cadre होना चाहिये।
– **नियंत्रित स्वायतता होनी चाहिए।**
– समाज / देश में गैर क़ानूनी गतिविधियों पर नजर रखना एवं सबूत इकठ्ठा करना हमेशा स्वयंमेव चलते रहना चाहिये।

स्वायत संस्थाएँ–2

– इन्हें स्वयं जाँच करने संज्ञान लेने एवं सम्बधित विभाग को सूचित करने का अधिकार होना चाहिये।

– Right to privacy – private तक ही होना चाहिए।

– अनियंत्रित या स्वयं में एक state नहीं हो जाये, इसके किये नियंत्रण एवं संतुलन होना चाहिए।

शरीर में मस्तिष्क मालिक है, परन्तु, रक्त संचालन, पाचन क्रिया उत्सर्जन, इत्यादि स्वतंत्र इकाई के रूप कार्य करते रहते हैं।

विचारणीय 4
Mob Lynching

- गलत है।
- कारण पुलिस और न्यायव्यवस्था की शिथिलता एवं उसकी कमियां है।
- गलत– करार करते समय सम्पूर्ण परिवेश को समझना आवश्यक है, जैसे गोरक्षक गलत है। परन्तु लूट और Rape करते हुए पकड़े जाने पर यह समाज की सामूहिक एवं स्वभाविक अभिव्यक्ति एवं परिणति है।
- इसमें गलती की सम्भावना है।

विचारणीय 5
आर्थिक अपराधी–1

- आर्थिक, 'अपराधियों' को राजनैतिक शरण देना गलत है।
- जो देश इन्हें शरण देते है वस्तुतः वे देश ही दूसरे सम्बधित देश का पैसा गवन करने/कराने के जिम्मेदार है।
- हर सम्भव उपाय से ऐसे लोगों को सख्त (deterent) सजा मिलनी चाहिये।
- इन पर देश–द्रोह का सीधा मुकदमा चलना चाहिये।
- असली अपराधी वे बैंकर/अधिकारी है, जिन्होंने इन्हें गलत ढंग से पैसे दिए।

सामूहिक सोच का निर्माण करें।

आर्थिक अपराधी–2

- गवन करना और घाटा हो जाना अलग है।
- किसी की मृत्यु का / मुआवजा (compensation) यदि एक खास क्षतिपूर्ति रकम हो सकती है तो उतनी राशि का गवन करने वाला एक व्यक्ति (या आनुपातिक) हत्या करने का अपराधी ही है।

विचारणीय 6
हमारा दायित्व–पिण्डदान–1

मेरा वर्त्तमान जीवन क्या सिर्फ मेरे माता–पिता का ऋणी है ? नहीं, बल्कि उनके निर्माता, मेरे पुरखों का, मेरे भाई, मेरे चाचा, मेरे अनेक शिक्षक, मेरे मित्र, अनजाने वे लोग जिन्होंने कई बार मेरी जिन्दगी बचाने जैसी मेरी मदद की। पूरा समाज जिसके बीच मैं जीवित रह सकता हूँ।

पिण्डदान–2

फिर वे पशु–पक्षी जो हमारे जीवन को चलाते है। वह पूरा वनस्पति–जगत जो प्राणी मात्र का आधार है; मेरा भी है। मेरी उपस्थिति, मेरा जीवन सचमुच इन सबों पर आश्रित है अतः मुझे इनका ऋणी होना ही चाहिए। ऋण चुकता करने के लिए लोगों को धन्यवाद देना ही चाहिये, अन्य प्राणियों के प्रति सहृदयता, उनके बचाव के उपाय, वृक्ष रोपण और उन्हें जल देना ही चाहिए। इसी पर जीवन टिका है।

पिण्डदान–3

सांस्कृतिक परम्परा के रूप में पिंडदान हमारी उन सबके प्रति कृतज्ञता ज्ञापन है। पूरे समाज से आपके जीवन के जुड़ाव का बोध करानेवाला है। पशु–पक्षी एवं वनस्पतियों के प्रति भारतीय दृष्टिकोण। उनके वैज्ञानिक संबंधों की विवेचना सहित स्वीकृति है, आने वाली पीढ़ियों को उनके प्रति अपनाए जाने के लिए 'दृष्टि' की शिक्षा है। कभी भी किसी भी पर्यावरणवादी ने मुझे इतनी अच्छी तरह से पर्यावरण के बारे में नहीं समझाया था।

विचारणीय 7
एक राष्ट्र एक चुनाव

- लोकसभा, विधान सभा चुनाव एक साथ ही होना चाहिये।
- शुरू में ऐसा ही हुआ था हर बार क्यों नहीं ?
- अलग चुनाव में धन एवं समय की काफी क्षति होती है।
- एक साथ चुनाव होने से चुनावी भ्रष्टाचार भी कम होगा।

  यदि सरकार पांच साल से पहले गिर गयी?
- नये समीकरण/राष्ट्रपति शासन /अन्य विकल्प विकसित हो सकते हैं, बचे हुए समय के लिए सिमित क्षेत्र में नए चुनाव कराये जा सकते है।

विचारणीय 8
घुसपैठ

संदर्भ : NRC / रोहिंग्या / बंगलादेशी

- ये किसका रोजगार छीनते हैं ?
- किसकी जमीन सिमटती है (Per square km population किसका बढ़ता है) ?
- किसका घर लुटता है ?
- आंतकवादी और अतिवादी बनकर ये हमारे गरीब, कमजोर वास्तविकत (Bonafide) नागरिकों के जीने का अधिकार छीन लेते हैं।

असली दोष उनका है, जो इन्हें समर्थन देते हैं, वोट के लिए। यह देशद्रोह / घोर समाजद्रोह ही है।

विचारणीय 9
अनिवार्य सैन्य सेवा, क्रम–01

- सभी भारतियों के लिए 2 वर्षो की सैन्य सेवा अनिवार्य हो।
- सैन्य सेवा से अनुशासित और स्वस्थ नागरिक तैयार होंगे।
- देशवासी राष्ट्र के भूगोल, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, विशालता सास्कृतिक, विभिन्नता से परिचित होंगे।
- राष्ट्रीयता एवं समाजिकता की भावना की वृद्धि से राष्ट्रीय अखण्डता मजबूत होगी।

क्रम–02

- वाह्य आक्रमण एवं वाह्य आकस्मिकता की स्थिति के लिए द्वितीय स्तर की व्यवस्था तैयार होगी।
- आतंकवाद, साम्प्रदायिक हिंसा में कमी होगी एवं आतंरिक आपदाओं से निपटने में राष्ट्र ज्यादा सक्षम होगा।
- समय–समय पर बड़े स्तर पर कानून व्यवस्था बनाये रखने में उनमे से कुछ का सहयोग प्राप्त हो सकेगा अर्थात एक सुरक्षित संवर्ग (Buffer cadre) तैयार रहेगा।

क्रम–03

- नागरिक सुरक्षा एवं संरक्षा मजबूत होगी। जमीनी, हवाई, रासायनिक हमलों में लोगों की सुरक्षा कर सकेंगे क्योंकि ये सब उनकी शिक्षा, के अंग होंगे।
- नागरिकों में सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना प्रवल होगी।
- दूसरे मित्र या दुश्मन राष्ट्र पर हमारी आंतरिक एवं वाह्य सुरक्षा शक्ति के कारण अनुकूल प्रभाव पड़ेगा।

इसके कार्यन्वयन पर विस्तार पूर्वक निर्णय लिया जाना चाहिए।

क्रम–04

अनिवार्य सैन्य सेवा में क्या होगा ?
शारीरिक प्रशिक्षण

(पी० टी० / परेड)	1 घंटा सुबह
खेल	1 घंटा शाम
श्रमदान–शस्त्रशिक्षा / शस्त्र संचालन	2 घंटा
पढ़ाई	– 5 घंटा
सांस्कृतिक कार्यक्रम	– 1 घंटा
स्वध्याय	– 2 घंटा
हावि (शौक) / प्रार्थना	– 1 घंटा

क्रम–05

किनके लिये
22 वर्ष से पहले सब के लिए

– किसी भी स्नातक / स्नातकोतर शिक्षा के लिए।

– वर्ग 1, 2 या 3 की 7 किसी भी सरकारी या गैरसरकारी नौकरियों के लिए।

– किसी भी व्यक्तिगत रोजगार के लाइसेंस के लिए।

क्रम–06

क्या पढ़ाई होगी – +2 के स्तर का

- देश / विदेशः– भूगोल, इतिहास (5000 साल से आजतक का) – मशहूर हस्तियाँ, घटनाएं, लड़ाईयाँ इत्यादि।
- साहित्य
- तीन भाषाएँ मातृभाषा / एक दूसरे राज्य की भाषा, हिन्दी / अंग्रेजी
- सविधान की प्रमुख जानकारियाँ, अधिकार, कर्तव्य, शासन व्यवस्था।
- यातायात के नियम
- समाज शास्त्र।
- सामान्य विज्ञान, सामान्य गणित / जीव विज्ञान।

क्रम–07

क्या पढ़ाई होगीः–

- कम्प्यूटर (Computer)
- बेहतर लाइफ स्टाइल – व्यक्तिगत एवं सामाजिक सफाई।
- रोजगार सम्बंधि जानकारियाँ, (Carrier Counseling)
- भेद–भाव रहित खान–पान, रहन–सहन।
- कठिन परिस्थितियों जैसे युद्ध, जंगल, पानी के बीच इत्यादि में जीने, बचाव की कला।
- स्वास्थ्य, प्राथमिक उपचार।
- प्राकृतिक आपदायें, आतंकी हमले, युद्ध के समय क्या राहत बचाव एवं सुरक्षा करें, इसका प्रशिक्षण।

विचारणीय 10
बाघा बार्डर–1.... आँखों देखा

– दोनों तरफ एक एक पैवेलियन (स्टेडियम जैसा) बना हुआ है।

– पाकिस्तान की तरफ के पैवेलियन पर मो० जिन्ना की बड़ी सी तस्वीर है। भारत की तरफ BSF का बोर्ड है।

– सामान ऊँचाई पर दोनों देशों के ध्वज फहराते हैं।

– सबकुछ एक जैसा है, पोशाक छोड़कर।

बाघा बार्डर–2.... आँखों देखा

– संध्या समय दर्शनीय हाव भाव के साथ परेड होता है।

– खूब सीने फुलाये, मुक्के दिखाए एवं पाँव फटकारे जाते है।

– देशभक्ति की भावना हिलोरें लेने लगती है।

– अन्नतः दोनों झण्डे एक साथ एक गति से उतारे जाते है।

बाघा बोर्डर 3
अटारी बार्डर का प्रश्न 1

– 1947 के आजतक कितनी बड़ी लड़ाईयाँ लड़ी गयीं ? छोटी लड़ाईयाँ तो रोज होती ही हैं।

– कितने लोग वाघा बार्डर के आर पार उसके बनने के समय मरे ?

– कितने रोज मर रहे हैं ?

बाघा बोर्डर 4
अटारी बार्डर का प्रश्न 2

– आतंकवाद अन्य कारनामें एवं एक दुसरे को नीचा दिखाने का यह 'शो' (वस्तिविकता) कब तक चलता रहेगा लोग कबतक मरते मारते रहेंगे ? कब तक इस 'शो' पर करोड़ों खर्च होता रहेगा ? कब तक हम रोजी–रोटी की जगह बाहर से अस्त्र–शस्त्र खरीदते रहेंगे ?

बाघा बोर्डर 5

अटारी बार्डर प्रश्न 3

इससे लाभान्वित कौन(कौन–कौन) हुए ?

- जो कायदे आज़म एवं राष्ट्र का निर्माता बन गये या उस राष्ट्र के लोग ?
- जो प्रथम प्रधानमंत्री बने या उनके राष्ट्र के लोग ?
- या जिन्होंने ऐसी परिस्थिति बनाया दिया कि जो एक ही थे दो बनकर अनन्तकाल तक अपनी सभी शक्ति/सामार्थ्य का उपयोग एक दुसरे के विरूद्ध करते रहें ऊपर न उठें।
- या जो दोनों के बीच के दरार में बड़ा कील घुसेड़कर इस घमासान को बढ़ावा देकर पहले एक को फिर दुसरे को अपनी कुण्डली में कसने का प्रयास कर रहें हैं?

बाघा बोर्डर 6

अनगिनत प्रश्न

लड़कर चाहते क्या हैं ? लड़ते रहना चाहता कौन है?

निष्कर्ष कब/क्या मिलेगा ?

कभी भी एक मिलेगा क्या ?

किसी का टुकड़ा होगा क्या ?

एक के टुकड़े होने से दुसरे को क्या मिलेगा ?

इस प्रकार किसी की आर्थिक स्थिति आसमान में पहुँच जायेगी क्या ?

हाँ इन फितूरी कारनामों के वजह से कुछ लोग दोनों तरफ शासन में रहेंगें।

करणीय

तलाश विचार – पुर्ननियोजन

"सेवानिवृत के बाद पुर्ननियोजन युवाओं के अधिकार और हित का हनन है।"

<u>करणीय</u>

तलाश विचार – सम्पति का उत्तराधिकार

"सम्पत्ति का उत्तराधिकार–गरीब को गरीब और अमीर को अमीर बनाता है।"

- भ्रष्ट आचारों का सर्वप्रमुख जनका है।
- समानता के अधिकार को निस्त कर देता है।
- आरक्षण का जनक है।
- सभी इसका अनुपालन करते हैं।
- परन्तु यह गलत है।

89

ये सूरत बदलनी चाहिए

हो गई पीर पर्वत–सी, पिघलनी चाहिए।
इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए।

आज यह दीवार पर्दों की तरह हिलने लगी,
शर्त्त लेकिन थी कि ये बुनियाद हिलनी चाहिए।

हर सड़क पर, हर गली में, हर शहर, हर गाँव में,
हाथ लहराते हुए हर लाश चलनी चाहिए।

सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं,
मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए।

मेरे सीने में नहीं तो तेरे सीने में सही,
हो कहीं भी आग लेकिन आग, जलनी चाहिए।।

– दुष्यंत

90

चन्दन है इस देश की माटी...

तपो भूमि हर ग्राम है।
हर बाला देवी की प्रतिमा,
बच्चा–बच्चा राम है।
चन्दन है इस ....
हर शरीर मंदिर सा पावन
हर मानव उपकारी है।
जहाँ सिंह बन गए खिलौने,
गाय जहाँ माँ प्यारी है।
चन्दन है इस ....
जहाँ सवेरा शंख बजाता
लोरी गाती शाम है।
हर बाला देवी की प्रतिमा,
बच्चा – बच्चा राम है।
चन्दन है इस ....
जहाँ कर्म से भाग्य बदलते,
श्रम निष्ठा कल्याणी है,

लगातार

91

चन्दन यह इस देश माटी....

त्याग और तप की गाथाएँ गाती कवि की वाणी है।
ज्ञान जहाँ गंगा जल सा
निर्मल है, अविराम है
हर बला देवी की प्रतिमा,
बच्चा–बच्चा राम है।
चन्दन है इस ....
इसके सैनिक समर भूमि में
गाया करते गीता है।
जहाँ खेत में हल के नीचे,
खेला करती सीता है।
जीवन का आदर्श यहाँ पर
परमेश्वर का धाम है।
चन्दन है इस ....
तपोभूमि हर ग्राम है।
हर बाला देवी की प्रतिमा,
बच्चा–बच्चा राम है।
चन्दन है ....।

92

आप लोग

क्या कहूँ कि किस तरह सड़ गए है आप लोग
सियासत के पचड़े में पड़ गए हैं आप लोग।
दलदल में हैं धँसे हुए खेलते हैं,
फिर भी दामन साफ है, कहते हैं आप लोग।
हमारे दिलों में कितनी गहराई, जज्बातों की है,
नश्तर चुभा–चुभा के नापते हैं आप लोग।
सीमाएँ बेमानी हैं, मूल्यों के अर्थ बदल डाले,
शर्म–ओ–हया को बेचकर जीते हैं, आप लोग।
अपनों से ही लड़–कट के बिखरता है आदमी,
मुहब्बत के नाम से ही खेलते हैं आप लोग।
जिनकी आँहें है खोजती सुबह की रौशनी,
उनकी लंबी रातों के नुमाइंदे हैं आ लोग।
वो जो रोज भीख चौराहे पे माँगता है,
लूटने में तो उसे भी, न बख्शे हैं आपलोग।

–डॉ॰ अविनाश प्रसाद

बहता हुआ नल : ममता

ममता : पिताजी, हमारे घर के बगल में सड़क पर एक नल कई दिनों से बह रहा है।

पिता श्री : तो मैं क्या करूँ ?

ममता : सड़क पर कितना कीचड़ हो गया है, लोगों को आने–जाने में कितनी असुविधा होती है, पीने योग्य पानी की बर्बादी अलग।

पिता श्री : जिनको नल ठीक करने की जिम्मेदारी है, वे नहीं देखते, जिन्हें असुविधा होती है वे नहीं बोलते, तो मैं इसमें क्या कर सकता हूँ ?

ममता : असुविधा तो हमें भी हो रही है, आप इतने बड़े पदाधिकारी हैं, आप क्यों नहीं सम्बन्धित विभाग को कुछ कहते हैं ?

पिता श्री : मैं ही सर दर्द क्यों लूँ ?

ममता : यदि आप (जो समर्थ हैं) नहीं लेंगे (जिम्मेदारी) तो दूसरा (जो गुजर जाता है) कैसे कुछ कर सकेगा ?

ममता : अच्छा बाबा देखता हूँ।

नल का बेकार बहना बंद हो गया।

ममता ने 'तलाश' की अग्रणी भूमिका निभाई, ममता के पिता श्री ने 'तलाश' का कार्य किया, 'तलाश' के कुछ करने से बहुत पूर्व से लोग कर रहे हैं। परन्तु बहुत थोड़े। ज्यादा से ज्यादा लोगों को इस दिशा में सक्रिय होने की आवश्यकता है। ममता के सदृश्य 'पहरुओं' की हमें बहुत जरुरत है।

'तलाश' परिवार की ओर से ममता जहाँ भी हों (जहाँ–जहाँ भी हों) हमारी शुभ–कामनाएँ ! एवं आकांक्षाएँ कि वे 'तलाश' की मशाल हमेशा जलाए रखेंगी।

किस तरफ हैं साक्षर

इस तरफ हैं, उस तरफ हैं, हर तरफ हैं साक्षर।
आँखें फाड़े हूँ देखता किस तरफ हैं साक्षर ?

लूट जहाँ हो रही है साक्षर तो हैं वहीं,
जहाँ घूस–घोटाले पनप रहे, साक्षर क्या वहाँ नहीं ?

कर चोरियाँ चलती जिधर हों उसी तरफ हैं साक्षर
आँखें फाड़े हूँ देखता किस तरफ हैं साक्षर ?

उजाड़ गरीबों को भगाता साक्षर उधर से आ रहा,
गरीबी की कुटिया हटा कर महल बना रहा है।

देखो ! है साक्षर उधर से आ रहा।
छुप घात होती है जिधर उस तरफ हैं साक्षर,

हैं साक्षर करोड़ों यहाँ, पर 95 प्रतिशत लुटेरे यहाँ।
खोज करता निरक्षर, पर मिल रहे हैं साक्षर ।

नेता उगते, वेता उगते, प्रशासन उगते,
टेक्नीशियन उगते पर उगते नहीं निरक्षर।

हे ईश करूँ वंदना तुझे, बना दे तु मुझे निरक्षर
आँखें फाड़ हूँ देखता किस तरफ हैं साक्षर ?

डॉ० अविनाश प्रसाद

आजकल अपने देश में

गूंगे दे रहें हैं भाषण,
संगीत पर बहरे झूम रहे।
लंगड़े, देखो कत्थक करते,
तस्वीर को अंधे चूम रहे।
जम्मेदारी देते बिल्ली को,
चूहों की रक्षा करने की।
साँपों को मिलती पूरी सुरक्षा,
पर है, उन्हें आजादी डंसने की।
बिल्ली बीच रोटी का झगड़ा,
मिलता, बन्दर को सुलझाने को।
क्षीर–नीर अलग हो कैसे?
हंसो, को, चलते कौवे हैं समझाने को।
पदक अहिंसा का है मिलता,
मुँह खून लगे इन भेड़ियों को।
कह चालाकी को व्यवहार–कुशलता,
पूजा करते, आज धूर्त्त लोमड़ियों को।
आजकल अपने देश में लगभग ऐसा ही तो होता है।
चाँद नहीं जगता है रात में,
और सूरज दिन भर सोता है।

प्रो० (डॉ०) अमरेन्द्र मित्र